

विश्वविख्यात नाटककार "बर्टोल्ट ब्रेख्त" के नाटक

"THE EXCEPTION AND THE RULE"

पर आधारित

सौदागर

भारतीय रूपांतरण एवं अनुवाद : श्रीकांत किशोर

निर्देशन एवं आकल्पन : बंसी कौल

पात्र :

सौदागर

दूसरा सौदागर

कुली

गार्ड

तिलंगे 1

2

3

सरायवाला

पुलिसवाला

जज

जज के सहायक

विधवा

ग्रामीण

माया नगरी कि मोहक कहानी
जिसमे न राजा हैं न कोई रानी
धरती का सोना धरती का पानी
धरती के बन्दों कि ये जिंदगानी
माया नगरी कि मोहक कहानी

इस नगरी में कोई आता हैं
सब लूटपाट ले जाने को
कोई सबका बोझा ढोता हैं
दो जून पेट भर खाने को
चलते दोनों हैं साथ मगर
वे साथ कहाँ चल पाते हैं
एक जंग जीतने जाता हैं
सारा सोना हथियानें को
दूजा मजदूरी करता हैं
जीवन कि नाव चलाने को

सुनोजी सुनो जी सुनोजी सुनो जी – 2
सुनोजी सुनो जी सफर की कथा है! कथा में सफर है सफर में क्या है
सफर में है शोषक है शोषित सफर में
कि होता जैसा नगर गांव, घर, में !
सुनाते हैं आपको कथा एक सफर की
सफर में है शोषक है शोषित सफर में
करते है क्या और कैसे ये करते,
इन सबकों हम गौर से देखे
गलत कि ये दिखते हैं बिल्कुल अजूबे
लेकिन न इसमें है कुछ भी अजूबा
मजा तो यही है मजा तो यही है
मजा तो यही है चलन है पुराना
चलन तो पुराना कठिन पर बताना
समझना कठिन, पर नियम है पुराना
गौर से देखो—2 शक के साथ गौर से देखो
शक के साथ गौर से देखो !
छोटी और सरल बातें भी, गौर से देखो—2 जांच के देखो—2
छोटी और सरल बातें भी जांच के देखो—2
हम दुनिया करे बदल न पाए, इस दुनिया को बदल न पाए
इसीलिए वे साजिश रचते
सोची समझी अफरा, तफरी, जाल बिछा कर पागल करना
इंसानों के पूरे दल को, सोच समझकर पशु बनाना
यही जमाना है यही जमाना
बदल न जाए कहीं जमाना
पर्दे के पीछे जाता है ! तीन तिलगें
तीन तिलगें—2 , हम हैं तीन तिलगें
दुनिया वालों की नजरों में हम है तीन लफगें
उछल कूद और धूम मचाना काम करें बेंढगें
चेहरे पे चेहरे वालों को हम कर देते नंगे
अरे धूर-धूर के क्या देखते हो हम हैं वही तिलगें!
तीन तिलगें

सौदागर का तेजी से प्रवेश ! चिल्लाता है

सौदागर : अबे ओ गदहों इसी चाल से चलोगे तो चांडिल पहुंचने से पहले ऊपर का टिकट कट जाएगा ! क्या समझे!

तिलंगा ! : राम, राम झब्बूलाल जी, किधर चले हैं : , बहुत झटपट में है !

सौदागर : टौक दिया न ! तुम लोगों को दिन समय का कुछ विचार नहीं रहता ! जब देखा, जहां देखा ! छोक दिया ! कह तो दिया कि चांडिल बाजार जाना है !

तिलंगा 3 : चांडिल जाना है कि और आगे कहीं जाना हैं

सौदागर : आगे कहा जाना है! आगे है बियाबान रेगिस्तान ! रेगिस्तान में क्या धूल फाकनें जाना है!

तिलंगा 2 : अच्छा तो चांडिल जा रहे है ! मगर किसलिए

सौदागर : किसलिए ये देखो ! अरे तुमसे मतलब किसलिए ! **मुंह बनाकर** किसलिए !

तिलंगा : अरे खिसियाते काहे हैं ! बहुत जल्दी में लगते हैं , इसीलिए पूछ दिए ओर क्या ! क्या पता कोई मरनी — हरनी की बात हो, तो हम भी साथ लग जाए।

तिलंगा : चुपसाले। रास्ते में कहीं मरनी की बात की जाती है। कुछ हो — हो गया तो ! **सौदागर से** ! माफ कर दीजिए सौदागर झब्बूलाल जी , इसको अपनी जबान पर लगाम नहीं है जरा भी। लेकिन इतनी जल्दी में क्यों हैं ! लगता है जैसे कोई खदेड रहा हो।

सौदागर : अरे वही बात है न। जैसे कुत्ता बिल्ली के पीछे लगा रहता है, वैसे पीछे पड़ा हैं। दो दिन से पीछे—पीछे लगा हुआ है!

तिलंगा 3 : कौन पीछे लगा हुआ हैं।

सौदागर : है एक चपड़कनाती। अपने को सबसे बेसी तेज बूझता हैं, जैसे इन्हीं के इन्तजार में बैठा हुआ है टेंडर ! **दातों से जीभ दबाता है !**

तिलंगा : अयें, कौन चीज !

सौदागर : कुछ नहीं कुछ नही।

तब तक गाइड ओर कूली प्रवेश करता है। कूली ऊपर से नीचे तक वस्त है , उसकी पीठ पर भारी बोझा है। गाइड एक हाथ में सामान लिए है !

सौदागर : अरे हरामजादों इसी चाल से चलोगे तो मेरा सब किया कराया चौपट करके रख दोगे। देखो वे हमारी पीठ पर आ चूके। **गाइड से।** अरे तुम अपने आदमी को तेजी से क्यों नहीं हाकतें। तुमकों में—किरायें पर इसलिए रखा है कि अपने आदमी को हांकों इसलिए नहीं कि उसके साथ सैर करो ,करो, वह भी मेरे पैसों पर। चलो हाकों उसको।

तिलंगा 1 : **कूली से** ऐ पहलवान , कहां जा रहे हैं आप लोग !

कूली : दोघड़ा जता है बाबू , ई मलिकार का कोई काम है। टेंबर की पेंटर कि का तो लेना है।

सौदागर : चुप साला। चलने में भार पड़ता है और बतियाने कहिये तो लुबुर—लुबुर करेंगे। रास्ते में चोर चिल्हारे जो भी मिलेगा उसे सही पता ठिकाना बताना जस्सी है क्या। चल जल्दी।

तिलंगा 3 : ऐ ऐ सौदागर ! हमलोग तुमकों चोर— चोर चिल्लारे लगते है।

सौदागर : आये, अरे नहीं नहीं भैया ! हम तो एक बात कह रहे थे। आप ही बताइये न रास्तें में सभी शरीफ आदमी ही तो नहीं मिलते। अब आप लोग तो जान पहचान वाले है, लेकिन कोई चोर मिल गया तो क्या कर लेगे। इसीलिए ऐसा कहते है।

तिलंगा 3 : कुछ नहीं, यहां बैठकर माफी मांगों। इतने आदमियों के सामने हमकों चोर बोल दोगे! माफी मांगों नहीं तो।

तिलंगा 2 : चूप रह ! यह अपने आदमी को बोले हैं। इसमें तुम क्यों पिनकता है रे। जाइये, जाइये सेठ जी। फुड़की मसरते हैं।

सौदागर : अरे चलते हो तुम लोग कि अब जूता खिलवाओगे !

गाइड : कोशिश करो, थोड़ा और तेज चलने की कोशिश करो।

सौदागर : तुम कभी बढ़िया गाइड नहीं बन सकते। ! **मूहू बनाकर** ! कोशिश करो। यही तरीका है नौकर से बात करने का एक टके का आदमी नहीं है। मूझे कोई खर्चीला गाइड रख लेना चाहिए था। पैसा लेता तो काम भी करता है। और एक ये हैं ! **मूहू बनाकर** ! तेज चलने कि कोशिश करो। अरे दिखाऊ में कि कैसे हांका जाता हैं, साले चलते हो या ! **कूली को एक लात लगाता है !**

तिलंगा। : हां हां मारिये मत , थका हुआ है बेचारा।

सौदागर : आप समझते बूझते नहीं हैं, तो बीच में टोका टाकी क्यों करने लगते है भाई। मूझे मार—पीट करने का शोक लगा है क्या ! लेकिन क्या करे मारे नहीं तो पुचकारे ! चलता है जैसे पैर में मेंहदी लगी है। अब में ठहरा काम काजी आदमी। एक मिनट की देरी से मामला ठन—ठन हो जाएगा

तिलंगा। : अच्छा ये मामला है क्या ! सो बताइये न।

सौदागर : हैं हैं अरे कुछ नहीं है। बस ऐसे ही है।

तिलंगा 3 : मत बताइये हम समझ गये।

सौदागर : अयें क्या समझ बयें !

तिलंगा 2 : वहीं

सौदागर : क्या वही रे : अये क्या वही ! समझना— बूझना साढ़े बाइस और शो करेगा , जैसे सब समझ ही गया।

तिलंगा 3 : अरे टकटकिया का मामला है और क्या। आप टेंडर लेने जा रहें हैं , कुछ पुल पुल बनबाने का मामला होगा।

सौदागर : धत् , वो सब नहीं है। अरे तुमलोग तो अपने आदमी हो। तुम लोगों से क्या छिपाना ! दरअसल मामला है तेल का। हमारा देश अब ईराक से तेल नहीं मंगवाएगा। खुद निकालेगा भैया खुद। तेल निकलेगा तो रेल चलेगी। रेल चलेगी तो खुशयाली आयेगी , बग तुम्हीं बताओं क्या में ये सब अपने लिए कर रहा हूं ! नहीं न। में कर रहा हूं देश के लिए। समाज के लिए। और तो और मानवता के लिए।

नेपथ्य से दूसरा सौदागर

दूसरा सौदागर : अरे ओ झब्बूलाल जी, मुझकों भी साथ लेते चलिए। साथ चलेगें रास्ता आसान रहेगा। बांट-चोट खायेगे गंगा नहायेगे। झब्बूलाल जी सकिए।

सौदागर : अरे , ये कौन है भाई ! अरे बाप रे। ये सब तो बहुत करीब आ गया। अरे भागों सालों।

दू सौदागर : अरे झब्बूलाल जी सकिए।

सौदागर : जहन्नुम में जाओं , ऐ चलते रहो। स्कना नहीं। भाग चलता है।

तिलंगा। : ऐसे कितनी देर चलवाइयेगा ये कुलिया तो मर जाएगा। देखते नहीं। लगता है जैसे पैर में छाला पड़ गया है।

सौदागर : अभी तीन दिन और चलाना है। स्क गये तो मामला चौपट समझों।

तिलंगा 2 : बाप रे। तीदा दिन। कैसे चलवाइयंगा !

सौदागर : अभी मेरे पास बहुत से उपाय हैं। साम, दाम, भय, भेद। दो दिन चलवायेगे डाट-डपटकर। एक दिन चलावायेगे भेद बतलाकर मतलब वादों के भरोसे। क्या समझे !

तिलंगा 3 : सिर्फ वादा ही कीजिएगा कि पूरा भी कीजिएगा !

सौदागर : अरे दोघड़ा पहुंचकर देखा जाएगा। ! हंसता है ! गाइड से अरे तुम लोग चलते ही कि कहरते हो। और ये तुम्हारा बहनोई लगता है क्या जी। हाथ उठाना तो दूर एक कड़वी बात भी नहीं कहती। चलो हांकों उसकों।

कूली : हमको मारिये, नहीं तो मलिकार तो और जोर से मारेगे।

गाइड कूली को झूठ मूठ पीठता है

गीत सुनोजी सुनोजी सुनोजी सुनोजी
सुनोजी सुनोजी सफर की कथा है
कथा में सफर है, सफर में कथा है
सफर में है शोषक, है शोषित सफर में
कि होती है जैसा नगर गांव घर में
सुनोजी सुनोजी सुनोजी सुनोजी
चांडिल बाजार का शोर

सौदागर : ओ हो हो। आखरिकार , चांडिल बाजार पहुंच गए। भगवान का लाख-लाख शक है हाथ जोड़ता है।

तिलंगा : कहिए झब्बूलाल जी। अब तो मगन है न। आपने कम्पीटिटर लोग तो एकदम पीछे रह गए

सौदागर : भगवान का शुक् है। अरे क्या बतायें और पहले पहुंचते लेकिन मेरे साथ कोई आदमी है ! एक दम फालतू। हार-जीत से इन्हें कोई मतलब ही नहीं।

तिलंगा 3 : है न , जो कमाइयेगा , उनमें से इनको भी कुछ दीजिएगा क्या ,

सौदागर : अरे बचवा सो सब बात नहीं है। अच्छा जरा एक बात बताओं। इधर कोई सराय बराय है क्या !

तिलंगा 1 : हां हां, है सेठ जी। आगें से बायें जाकर दायें हो जाइयेगा फिर दायें से बायें होकर सीधे हो जाइयेगा वहां एक पीपल का पेड़

सौदागर : हां हां, हां। जरा तुम लोग परोपकार करो न। साथ में चले चलो। थोड़ी गप-शप भी हो जाएगी

समाजी 2 : हमें माफ कीजिए सेठ जी। अरे उधर देखिये एक पुलिसवाला आ रहा है, उससे कहिये।

तिलंगा 3 : अरे कहना क्या है ! वोतो अपने आप आएगा उपने पास। जैसे भेर को ताके इंजोर , वैसे इनकर उहै चकोर।

पुलिस वाला पास आकर सैल्यूट करता है

पुलिस : सब कुछ ठीक तो है सर। आपको कोई दिक्कत तो नहीं हुई। उधर सड़क तो जरा खराब है सर लेकिन बाकी इंतजाम तो ठीक रहा।

सौदागर : हां , सब ठीक ही है। में चार की जगह तीन दिन में ही यहां पहुंच गया। रास्ते में धूल बहुत हैं लेकिन में जो ठान लेता हूं। उसे पूरा करता हूं। अच्छा यहा कोई सराय-वराय है कहां ठहरायेगे आप हमें।

पुलिस : हूं। है सर। पास ही में है। आइये न।

तिलंगा। : पालतू कूत्ता है। पुलिस घूमकर देखता है। तिलंगा 2 कूत्ता बनकर मू मू करता है।

तिलंगा 2 : में में।

पुलिस : चलिए सर

सौदागर : चलिए, अच्छा चांडिल के बाद सड़के कैसी है ! अब हमारे सामने क्या आने वाला है।

पुलिस : अब सड़क कहां सर, अब तो सुनसान रेगिस्तान हैं।

सौदागर : पुलिस का इंतजाम तो है न :

पुलिस : नहीं सर हमलोग आखरि है।

सौदागर : अयें कोई पुलिस पहीं !

पुलिस : नहीं सर यही है सराय सर। अरे कोई है साडर निकलों भाई। देखो कौन आए है।

सराय वाला : बाहर निकलकर। आज जा जा धन्य भाग्य आइये हूजूर भीतर बिराजिये।

सौदागर : सुनो हमलोग यहां थोड़ी देर विश्राम करगें। जल्दी ही निकल जाना है। ठीक।

सरायवाला : हमारा सौभाग्य है माई- वाप। अन्दर विराजिये।

पुलिस : अच्छा सर , आप आराम कीजिए। हमलोग जरा गस्त पर है।

सौदागर : ठीक है , ठीक है। एक सिक्का निकाल कर देखता है फिर भेंट होगी।

सौदागर अन्दर चला जाता है। पुलिस हाथ में सिक्का लिए खड़ा है।

तिलंगा 3 : ठीक है ,ठीक है। जेब में रख के चलते बनियें।

पुलिस : कौन हैं वे , एक झापड़ खींच के देंगे तो फड़फड़ा के रह जाओगे। तुम्हारे जैसा थोड़ा-छोड़ा पुलिस के मुंह लगेगा।

तिलंगा 1 : माफ कर दीजिए हबरदार साहब , ये लतार हैं, ऐसे ही करता रहता है।

पुलिस : लबार है तो आपके घर में रखे। सरकारी काम काज में टांग लड़ायेंगा तो भीतर चला जाएगा समझा दो।

तिलंगा 3 : जाइये, जाइये सिपाही जी। बहुत मांज लिए।

पुलिस : अरे (उसे दोड़ाता है तिलंगा 3,1,2, के बीच से निकलता है पुलिस निकलना चाहता है कि 1,2, लंगड़ी मारने से वह गिर पड़ता है सहारा देते हुए।)

तिलंगा : आ हो हा गिर गए सिपाही जी।

पुलिस : देखो – देखो हम कह देते हैं, हमसे मुँह लगेगा तो बर्बाद करके रख देंगे।

(तिलंगा जो उसके पीछे खड़ा है पुलिस भी पीठ पर)

तिलंगा : चुप साला (पुलिस घूमकर देखता है। 1, से) दरोगा जी के मुँह लगता है रे। जाने दीजिए दारोगा जी

पुलिस : तुम्हारे चलते छोड़ देते हैं नहीं तो

(पीछे मुड़ता है। नीनो तिलंगे पुड़की देते हैं पुलिस समझता है^१ लेकिन तेजी से निकल जाता है। तिलंगे सोते सौदागर के एक साथ चीखकर उठा देते हैं)सौदागर हड़बड़ाकर उठता है।

तिलंगा : क्यों झबूलाल जी नींद नहीं आती हैं क्या।

सौदागर : आती है चाहे नहीं आती है तुमसे मतलब

तिलंगा : अरे मन में तो टेंडर का गुलगुला घूम रहा है तो नींद कहाँ से आयेगी।

सौदागर निन्दा न आये रात भर जीतने की बात पर दिन भर दोड़ा रात में दोड़ा अब हूँ सबसे आगे जीते हैं वलवान हमेशा निर्बल रह गये पीछे

(तिलंगा एक तरफ बैठते हैं। सौदागर उलजुलूल कर रहा है गाइड सब सोचने के बाद उसकी नकल करने लगता है सौदागर बाहर निकल जाता है। गइड दंड बैठ भी घर में लगता है।

तीनों तिलंगे – 1,2,3, 4, ऐ गाइड बाबू। ये सब क्या हो रहा है भाई ,

गाइड : ऐ भाई , अभी डिस्टर्व नहीं कीजिये। अभी बहुत गंभीर काम चल रहा है।

तिलंगा 3 : ये देखे करते हैं कान पकड़ के उठा बैठी और कहते हैं गंभीर काम चल रहा है।

गाइड : अरे समझते नहीं है तो बीच में गचर गचर क्यों करते हैं भाई। देखते नहीं कि हम कुछ सोच रहे हैं।

तिलंगा 2 : सोच रहे है। क्या सोच रहे है।

गाइड : जब से पुलिसवाले वाले से झबूलाल की बातचीत हुई है तब से ये कोई खिचड़ी पकाने में लगा हुआ है। जरूर कुछ उल्टी सीधी बातचीत हुई है अब वो दाँव सोच रहा है तो मैं उस दाँव का काट सोच रहा हूँ।

तिलंगा 3 : काट साचे रहे है। कहीं ऐसा न हो कि आपही का पत्ता कट जाए।

गाइड : छोड़ियो मेरे बिना वह जाएगा कहाँ दोघड़ा का रास्ता सिर्फ मुझे ही मालूम है।

तिलंगा : अरे छोड़िये। बाबू टके का मामला रहेगा तो झबूलाल आकाश पताताल की भी पहुँच जाएगा। आप तो अपने कुलिया के बारे में सोचिए वो कैसे पहुँचेगा दोघड़ा ?

गाइड : यही बात तो मुझे भी परेशान कर रही है। कैसे हम उसे दोघड़ा तक पहुँचायेंगे। ऊपर से ये जो दाँत चिड़ाता रहता है , सो अलग।

(सौदागर का दाँत चिड़ाते हुए प्रवेश)

सौदागर : (हँसता हुआ) सिगरेट पीओगे ? जरूर पीओगे। इसकी एक फूँक के लिए तुम लोग जान पर खेल जा सकते हो, मैं जानता हूँ —। घबड़ाने की बात नहीं है मैंने इतनी सिगरेट रखली है कि तीन बार दोघड़ा आने — जाने से खत्म नहीं कर पाओगे। हाँ

(एक सिगरेट देता है)

तिलंगा : पीयो बेटा, सिगरेट पीयो

(सौदागर पीछे मुड़कर देखता है और गाइड के कंधे पर हाथ रखकर उसे दूसरी तरफ ले जाता है।

सौदागर : आओ इधर बैठा जाए दोस्त। ह ह सफर भी क्या चीज है ? दो चार दिन में पराया आदमी भी ऐसा लगने लगता है जैसे अपना बेटा हो, तुम बैठ क्यों नहीं जाते। (गाइड बैठने की कोशिश करता है) नहीं बैठोगे, हम जानते हैं तुम नहीं बैठोगे। इसको कहते हैं संस्कार। आदमी का चेहरा देखकर उसके संस्कार का पता चल जाता है तुम्हें जब पहली बार देखा तभी मैंने कहा कि, ये आदमी संस्कारी है। इसलिए मैंने तुमको चुना। सबको छोड़कर तुमको चुना।

गाइड : अरे असली बात पर आओ मेरे बाप और कितनी देर नचाओगे। काइया साला।

सौदागर : ह ह। तुम भी कहते होगे कैसा काइया आदमी है सबके सामने बेइज्जत करेगा, अकेले में दुलार करेगा। यही दुनिया है वेता यही दुनिया है। इस माया नगरी में मायाजाल तो रचना ही पड़ता है। अकेले में मैं तुमसे दिल की बात कर सकता हूँ लेकिन सबके सामने , न न, सबके सामने तो तुम मालिक मैं नौकर — — न न तुम नौकर मैं मालिक। है कि नहीं हँ हँ, तो ये बात है बेटा जाओ बेटा सामान पैक कर लो और हाँ, पानी रखना मत भूलना मैंने सुना है रेगिस्तान में पानी के कुएँ बहुत कम है, और हाँ मोरे लल्ला कुलिया से से जला किनारे ही रहो तो अच्छा है। अभी तम्हें एक दिन और उसका पुगड़ा थामना है। आदमी बहुत खतरनाक हैं देखते हो एक शब्द भी बोलता है ! अरे चूप्पा मरद बोलती नदिया , कनका काटा , कभी न जीया। क्या समझे !अतः हमलोग दूसरा तरीका अपनायेंगे। मार पीट डाँट डपट एकदम बंद। मीठे से बतियाओ पर नजर रखो

भरपूर। बड़ा खतरनाक आदमी है। आगे रास्ता है खतरनाक हो सकता है वे अपना असली रंग दिखाए। इसलिए होशियार हो जाओ , है न शाबास बेटा , जाओ जाकर सामान बंधवा लो। हं हं हं हं मजेदार लोग है

समा जी : हां सो तो है ही। आपको इतना मजा दे रहो है , तो मजेदार तो हूँ ही। चूप रहो जी , खाली भचर, भचर।

गाइड चलकर दूरी तरफ जाता है जहां कूली सामान पैक कर दें रहा है गाइड मीर उसके लग जाता है।

तिलंगा 1 : ऐ ठीक से पैक करो जी , ठीक से।

कूली : क्या कहते है बाबूजी।

गाइड : अरे इन लोगों की बातों में मत पड़ो , अभी तुरंत निकलना है। चलो बांधो उसको। अच्छा ठहरो तुम यह सिगरेट फूकों , मैं बांध देता हूँ।

तिलंगा 3 : फूकों फूकों ! आता है , बुड़वा तो बताता है।।

कूली : अच्छा बाबू मलिकार हमेशा कहते हैं कि तेल निकलेगा तो रेल चलेगी। रेल चलेगी तो हमारी। रोजी रोटी का क्या होगा।

गाइड : इतनी जल्दी रेल नहीं चलेगी तुम मत घबराओ। ये लोग तेल के कूएं खोज लेते हैं फिर उन्हें खुदवा देते हैं। अरे छुपाने का ही तो सब खेल है। तुम क्या सोचते हो ये सौदागर देश का कायाकल्प करने निकला है। अरे ये निकला है , पैसा कमाने। ओर कमाई होती है छुपाने में। खोजने में नहीं , समझे।

कूली : हम कुछ समझे नहीं !

तिलंगा 1 : नहीं समझे तो चुप्प बेटों। वैर सूज के बज बजा रहा है। उसकी चिंता नहीं है , और ब्लैक मार्केटिंग का धंधा समझेंगे।

कूली : अरे गोड़ की चिंता करके भी क्या होगा बाबूजी, इस निगोरी को तो जब तक खिंचाए , खींचते चलता है। अच्छा बाबू रेगिस्तान में तो रास्ता और भी खराब होगा।

गाइड : हां

सौदागर छुप कर उनकी बात सून रहा है

तिलंगा 1 : चोरी – चूपके क्या झांक रहे हैं झब्बूलाल जी।

सौदागर : ऐ चूप ! हाथ से इशारा कर झांकता हैं। तिलंगा भी झांकता हैं।

कूली : अच्छा , सुनते है कोन तो नदिया पड़ती हैं, रास्ते में , उसको कैसे पार करेंगे , हमको तो तैरना करना आता नहीं है।

गाइड : सूरी नदी पड़ती है ! लेकिन उसमें कोई दिक्कत नहीं है। साल में नौ महीने तो सूखी ही रहती हैं। हां बाढ़ का समय हो तो बात अलग है।

सौदागर : भुला बताइये तो, ये कूली को बैठाकर सिगरेट पिला रहा है। ओर खुद खट रहा है उसके बदले।

कूली : बाढ़ के समय क्या होता है भैया।

गाइड : बाढ़ के समय पार करने में जोखिम हैं। हफते दस दिन में पानी उतर जाए तभी पार करना ठीक रहता है।

सौदागर : ये गाइड तो खतरनाक आदमी है।

तीलंगा : क्यों !

सौदागर : अरे ये कूलिया को जान बचाने का उपाय सिखला रहा है। कहता है , हफते दस दिन स्ककर जाना अच्छा रहता है , इसको तो हटाना पड़ेगा।

तीलंगा 1 : हटाना पड़ेगा अरे , ये क्या करते है सेठ जी। जाने दीजिए। मार अभी कौन बाढ़ का समय है कि आपको नुकसान होगा।

सौदागर : अरे आप समझते-बूझते नहीं हैं तो वकालत क्यों करने लगते है भाई। आगे रास्ता हैं सूनसान , पुलिस बगैरह कुछ भी नहीं है। और आज कल दिन बड़ा खराब चल रहा है ऐसे में मैं रहूंगा अकेला और ये रहेंगे दो। बहुत डेंजरस हैं। कुलिया को तो आदमी जैसे तैसे संभाल लेगा , लेकिन इस गाइड को। न बाप रे बाप ! अभी मैंने इतना समझाया और तुरंत फिर उससे चिपकने गया है। न ,न उसको निकाले बिना कोई चारा नहीं हैं।

तीलंगा 1 : हे हे हे झब्बूलाल जी मान जाइये , अबकी भर माफ कर दीजिये।

सौदागर : चूप ससुरा। **गाइड ओर कुली के पास जाता हैं** मैंने तुम्हें सारा सामान ठीक से पैक करने के लिए कहा था।। यह सब तो लगता हैं बैगारी किया हुआ है। यह देखों। इतनी कुकर – कुकर पैकिंग होती। **एक सामान को जोर से पकड़कर खींचता है।** बंद नहीं टूटता , ओर जोर लगाता है।

तीलंगा : और जोर लगाइये झब्बूलालजी। इतने में नहीं टूटेगा। ओर जोर से। हां , अब हुआ।

सामान की पैकिंग टूट जाती है।

सौदागर : यहीं पैकिंग है ! एक बोला खुलने का मतलब हैं पूरे एक दिन की बरबादी। और तुम यहीं चाहते है

गाइड : मैं नहीं चाहता। आपने जोर से झटका दिया इसीलिए यह टूट गया। नहीं तो नहीं टूटता

सौदागर : नहीं टूटता ! अरे ये टूटा कि नहीं टूटा। तुम्हारी यह हिम्मत कि मेरे ही मुंह पर कहते हों कि यह पहीं टूटा ! अरे ये टूटा या पहीं टूटा रे।

समाजी 3 : ओ गाइड बाबू , तुम्हारा भाग तो फूटा रे।

सौदागर : ऐड चूप रहो जी। गाइड से। तुम पर विश्वास नहीं किया जा सकता। सांप को दूध पिलाने से वो डंसना नहीं भूल जाएगा। अरे तुम तो कुली सेना चाहिए था कुली गाइड कौन कहेगा।। जिस गाइड का अपने कुली पर कोई रौब नहीं , वह मेरे किस काम का ! करना धरना साढ़े-बाइस और उपर से कुली को भड़काता हैं।

गाइड : क्या भड़काता हूं !

सौदागर : क्या भड़काता हूं ! अब तू मूझसे जबान लड़ाएगा तुझे डिसमिस किया जाता हैं। अभी , इसी क्षण। आउट एकदम आउट।

- गाइड : बीच रास्ते में : जहां चाहे निकाल दीजिएगा।
- सौदागर : यहां थाने में तेरी शिकायत नहीं कर रहा हूं यही बहुत समझों नहीं तो एक बार कह दू तो बेल मूड़ कर काला रंग पोत कर गधे पर बैठाकर पूरे टाउन में नचा देगे समझे। अपना भाग समझो कि मेरे जैसे दयालु आदमी से पाला पड़ा था। ये तो यहां तक की तनखाह। **सराय वाला आता है।** मैंने इसके पूरे पैसे दे दिये हैं तुम लोग मेरे गवाह रहोगे। चल फूट यहां से। फिर अपनी सूरत दिखाई तो भीतर करवा दूंगा। मैं इस कुली के साथ अकेले सफर पर निकल रहा हू तुम सबलोग मेरे गवाह रहोगे।
- तीलंगा 1 : हमें माफ काजिए झब्बूलालजी हमलोग मुंफत के झमेले में नहीं पड़ते।
- तीलंगा 2 : हां भाई दूसरों के मामले में अपनी गरदन कोन कंसाए।
- सरायवाला : हम कुछ समझे नहीं माई-बाप। ये अचानक क्या बात हो गई।
- सौदागर : यह अचानक क्या बात हो गई — ! अरे दिमाग में खाली भूसा भरा हुआ है क्या जी ! कह रहा हूं मैं अकेला सफर पे निकल रहा हूं रास्ते में मेरे साथ कुछ ऐसा वैसा होता है तो तुमलोग मेरे गवाह रहोगे। तो इसमें समझने की क्या बात है अर्जे।
- तीलंगा : और कुली के साथ कुछ ऐसा वैसा होता है तो।
- सौदागर : हे , ज्यादा फटर —फटर करना ठीक बात नहीं है बेटा अभी तुमने मेरी तरकत नहीं देखी है। केवल एस पी और कलेक्टर की बात नहीं हैं बैठे, प्राइम मिनिस्टर भी अपना इशारा समझता हैं। एक इशारे में कहो चरे जाओगे पता नहीं चलेगा। **आंखों पर हाथ रखकर दर्शकों को देखता है।** धत यहां भी सब लीचड़ ही बैठे हैं, इनमें से कोई गवाही देने के लिए तैयार नहीं होगा **सोचता है कागज कलम निकाल कर कागज पर कुछ लिखत है। गाइड और कुली एक किनारे पर कुछ बात करते है।**
- गाइड : बहुत बड़ी भूल हो गई। मूझे तुम्हारे साथ नहीं बैठना चाहिए था तुम होशियार रहना। ये खतरनाक आदमी हैं और मरे हुए की तरह किये रहोगे तो और मारेगा। अरे जरा ढंग से रहो। ये लो पानी की बोतल रास्ता तो भटकोगे ही उस समय काम आएगी। इसे छुपा लो नहीं तो वह छीन लेगा। चलो तुम्हें रास्ता समझा दू।
- कुली : न न न ! रहने दीजिए। कहीं सुन लेंगे तो हमको भी निकाल देगे। हो सकता हैं पैसा भी न दें। हमको तो सब बर्दाश्त करना पड़ेगा।
- सौदागर : सरायवाले से दोघड़ा जाने वाला एक सौदागर कल यहां आएगा उसे ये चिटटी दे देना। मैं अपने कुली के साथ अकेला सफर पर जा रहा हूं।
- तीलंगा 3 : बच के रहना , तू इस सौदागर के साथ अकेला सफर पर जा रहा है।
- सौदागर : ऐ तुम किसकी बात सुनता हैं रे।
- कुली : नहीं मालिक , हम क्युओं नहीं सुनों हैं।
- सरायवाला : लेकिन माई वाप ! इसको रास्ता नहीं मालूम हैं , गाइड रे बिना बड़ी दिक्कत हो जाएगी।
- सौदागर : अच्छा मिस्टर तो तू भी उसी थैली का चटटा बटटा है। गवाही देने कहूं तो कुछ नहीं समझता वैसे सबकुछ समझता हैं।

सरायवाला : नहीं सरकार , सो बात नहीं हैं। मेनें तो एक कही थी। हो तो हम इसको रास्ता समझा दें।

सौदागर : हां समझा दो। **स्वतः** चलो रास्ता तो निकल गया। रास्ता तो समझ लिया।

कुली : हां मालिक।

सौदागर : तो चलो। राम का नाम लेकर शुरू हो जाओ।

गाइड : मुझे नहीं लगता कि कुली रास्ता समझा होगा। वह बहुत जल्दी समझ गया।

सौदागर : अब कुछ बात नहीं हैं। और अगर कोई गड़बड़ हुई तो मेरे पास इसका उपाय तो है ही।

रिवाल्वर निकालता है और गीत गाता है।

कमजोर मर जाते हैं , बलवान तो ऐ लड़ा करते हैं
 ऐसा ही होता है यारों , ऐसा ही होना भी चाहिए।
 षरती किसकी धन किसका है
 ये तेल के कुएं किसके लिए मजदूर जो बीमा होता है वो बीमा होता किसके लिए
 जब तेल पे कब्जा करना हैं तो धरती से लड़ना होगा।
 धलती से तो लड़ना होगा , मजदूर से भी लड़ना होगा।
 इस लड़ने का मतलब हैं क्या सुन कान खोलकर भाई रे
 कमजोर तो मर जाते हैं बलवान तो यार लड़ा करते हैं।

कुली : जाता हूं मैं दौघड़ा को ,। दौघड़ा को जाता हूं।

रोक न पाए कोई मुझे जाता हूं मैं दौघड़ा को
 डाकू मुझको रोक न पाए
 रेगिस्तान पड़ा रह जाए

तिलंगा 3 : कहिए झब्बूलाल जी। मस्ती हैं न बिना का गीतमाला से बीच सफर कट रहा हैं।

सौदागर : खाक सफर कट रहा है , यहां डाकू लुटेरे हैं और इसको गाना सूझ रहा है। कुली से मेने उस गाइड को कभी पंसद नहीं किया। वह एक दिन अड़ेगा तो दूसरे दिन पांव छुड़ेगा। वो इमानदार आदमी नहीं था

कुली : जी मालिक **गाता है।**

कठिन रास्ता रोक न पाए जाता हूं
 पैर हमारे साथ न निभाए
 दर्द बहुत है राह में लेकिन

सौदागर : अच्छा तुम गाना क्यों गा रहे हो ! तुमको डाकूओं से डर नहीं लगता क्या ! हां वो जो भी ले जाएगे वो सग तो मेरा लूटा जाएगा , तुम्हारा क्या जाता है ! यही बात है न।

कुली : सजनी मेरी राह तके में जाता हूं
 विटिया मेरी राह तके में जाता हूं

सौदागर : चुपकर , इस समय गाने का क्या मतलब हैं अबें जाता हूं मैं दौघड़ा को। तुम्हारे बाने की आवाज दौघड़ा तक जा रहीं हैं। इससे कोई भी हमारे पीछे पर सकता है। दौघड़ा पहुंचकर जितना मन चाहें गा लेना। इस समय एकदम बंद।

तिलंगा 3 : गाओं जी , इतना बड़िया गीत चल रहा है। और इन्हें डाकू सूझ रहा हैं।

सौदागर : अभी एक आ जाए तो पट से अपने बिल में घुस जाओगे।

- तीलंगा 1 : घुसगे क्यों नहीं ! हमने दुनिया भर की जवाब दे ही ले रखी हैं। क्या !
- सौदागर : अरे सो सब बात नहीं है बेटा लेकिन इंसानियत भी तो कोई चीज होती है। हैं कि नहीं। इंसानियत पे ही न दुनिया चलती है। अब इस कुलिया को ही लो हमने इसको नौकरी दी हैं। इस बैरोजगार के जाने में नौकरी देना कोई मामूली बात है क्या तो इसका भी फर्ज बनता हैं चोर उच्चकों से मेंरी हिफाजत करे , नमक का सरियत अदा करे , लेकिन यह नहीं करेगा , हम जानते हैं।
- तीलंगा 1 : कैसे जानते हैं नहीं करेगा !
- सौदागर : अरे हम जानते हैं न। देखते हो एक शब्द भी फालतू बोलत है , ऐसे लोग पकके बदमाश होते हैं , भाई कोई उपाय होता हम इसका दिमाग खोलकर दिखा देते। हूं अजीब जात हैं नौकर जात की। अपने में रमा रहता है। बिना किसी बात के हंसता रहता हैं। अरे किस बात पर हंसता हैं रे। **चलता हैं ! कुली पीछे पैर के निशान मिटा रहा हैं।**
- तीलंगा 3 : यह आप जा कहां रहे हैं।
- सौदागर : **हड़कता हैं** कहां जा रहे , दौघड़ा जा रहे हैं और कहां जा रहे हैं।
- तीलंगा 2 : दौघड़ा जा रहे हैं। आपको रास्ता मालूम हैं क्या।
- सौदागर : मुझे नहीं मालूम कुली को तो मालूम हैं।
- तीलंगा 3 : रास्ता कुली को मालूम है तो आगे-आगे आप क्यों चल रहे हैं।
- तीलंगा 1 : अरे वह तो पीछे-पीछे पैर के निशान भी मिटा रहा है कि वापस लौटने का भी कोई सहारा नरहे
- सौदागर : अवे , हां , अरे बाप रे ! ऐ ऐ तुम वह क्या कर रहे हो।
- कुली : गोड़ के निशान मिटा दे रहे है मालिक।
- सौदागर : बदमाश , क्यों मिटा रहे हो !
- कुली : लुटेरों को चलते।
- सौदागर : लुटेरों के चलते , पहले तो तुम मुझके यह बताओं कि मुझे ले कहां जा रहे हो। तुम आगे आगे चलो। **कुली- आगे चलता है** अरे , इस बालू में तो पैरो के निशान सचमुच आसानी से देखे जा सकते हैं इन्हें मिटा देना ही बेहतर होगा।
- गीत
सुनो जी , सुनो जी सफर कथा हैं
कथा में सफर है सफर में कथा हैं
सफर में हैं शोसक है शोषित सफर में कि होता हैं जैसा नगर , गांव , घर।
चलता चलता कुली अचानक रुक जाता हैं
- तीलंगा 1 : क्या हुआ बाबू ! राह चलते-2 थरभसा क्यों गये !
- कुली : इ नदिया में तो बाढ़ आइ हई है।
- तीलंगा 2 : तो ये कोन सी नई बात है , अपने मुल्क में हमेशा कहीं न कहीं बाढ़ आयी रहती हैं।

तिलंगा 3 : भगवान का बैटवारा डिपार्टमेंट जरा गड़ाबड़ा गया हैं। कहीं बाढ़ आयी रहती हैं तो कहीं सुखाड़ पड़ा रहता है। ये कोई नई बात नहीं हैं।

कुली : हम नदी किनारे के वासी नहीं हैं बाबू , हमको तैरना नहीं आता।

तिलंगा 3 : तो इसमें कौन बड़ी बात हैं ! पटटे होकर हाथ पैर पटकना शुरू कर दो , तैर लिए और क्या

कुली : काहे मजाक करते हैं बाबू ! हम इसको पार नहीं कर पायेंगे।

तिलंगा 3 : सेठवा सर नीचे और पैर उपर कर देगा।

सौदागर : अरे कहां बतियाने बैठ गया रे।। आ हा हा हा , सामने गंगा मैया खड़ी हैं , चल जल्दी से पार उतर जाए।

तिलंगा 1 : आपकी एकदम कमजोर है झबूलालजी , ये गंगा नदी खूरी नहीं है , खूरी।

सौदागर : भाई एक ही बात है , नदी तो सब नदी ही होती है , क्या गंगा क्या खूरी।

कुली : मलिकार हमको तैरना नहीं आता।

सौदागर : ये देखों तैरना नहीं आता। अरे इसको पार करने में तैरना आने की क्या जरूरत हैं भाई ! बालू देखते – देखते आंखिया पिरा गई है तब जाकर एक छोटा सा नाला देखने को मिला है , कमर से ज्यादा पानी नहीं होगा और कहता है हमको तैरना नहीं आता चल जल्दी घुस , स्नान भी हो जाएगा और पार भी हो जाएंगे।

कुली : मालिक , दू पोरसा से कम पानी नहीं है। हम नदी पार कर पायेंगे।

सौदागर : छी छी छी छी ! तू जवान मर्द होकर भी ऐसी बात मुहं से निकालेगा में सपने में भी नहीं सोच सकता था। अरे तुमको अंदाज है कि हमलोग कैसे काम पर निकले है ! पूरे देश की आंखे तुम पर लगी है ! तेल ,तेल से रेल , रेल से हवाई जहाज , जहाज से राकेट , और राकेट से चंद्रमा। देश को चंद्रमा पर पहुंचना है बेटा , मामूली काम नहीं हैं। चल उतर जा।

कुली : नहीं मालिक , हमको तैरना नहीं आता।

सौदागर : तो में ही कोन सा बड़ा तैराक हूं , लेकिन उतर रहा हूं। क्या होगा दो घूंट पानी ही तो पीयेगे। काम का महत्व समझ में आए तो आदमी जान पर खेल जाता है बेटा , जान पर ये नदी कोन सी चीज हैं। आग में भी कूदना पड़े तो में कूद जाउंगा।

तिलंगा 1 : हां ,ये बात तो है। एक वार एक चवन्नी गिर गई कुएं में झबूलाल झप से कुएं में और चवन्नी उठा कर उसी झपाक से बहार भी।।

सौदागर : अरे , पीछा छोड़ो मेरे बापों , पीछा छोड़ो। माथे पर सवाल होकर बैठ गये हैं। और एक ये है। अरे तुमको रे। तुमको तो में खूब समझता हूं। नखड़ा-तुसरा पसार दिया हैं , तैरना नही आता। तु तो देरी चाहता हैं। रे देरी। ताँी तुझको ज्यादा तनखाह मिले। ओवर टाइम। छी छी छी। तू इतना नीच आदमी निकलेगा में सोच भी नहीं सकता था।

कुली : हम का करे भगवान गाता है।
जाना है उस पार रे मैया , जाना है उस पार।
निगल न जाए कहीं हमें ये तेज नदी की धार।

- जाना है
- 1 खड़े मुसाफिर दो है यहां पर नदिया के इस पार रे।
एक को है जाने की जल्दी , दूजा करे विचार रे।।
दूजे को है जान के लाले पहले का व्यापार रे भैया
- 2 एक नदी के पार उतर कर खायेगा तर माल रे
दूजे के फिर राह में फोटे रह जाए बेहाल रे
कैन चतुर है ,कोन बहादूर है बोलो मेरे यार रे भैया
जाना है उस पार रे
- कुली : बोझा ढोते-ढोते थक गये है मालिक। कम से कम आधा दिन तो आराम करने दों। तब शायद पार उतर सकते है।
- सौदागर : मेरे पास ऐसे भी बढिया उपाय है। मेरी पिस्तोल तुम्हारी पीट पर लगी है। बोल। अब पार करेगा की नहीं रे हरामी।

कुली सामान लाकर नदी में उतरता है

- सौदागर इसी तरह इंसान जीजता है बंजर और विरानों को
नदियां बांधी इसी तरह ओर रोक दिया तुफानों को
आदम के आदम को जीता , दास बना कर रक्खा
धरती फाली तेल निकाला , जीत का फल यू चक्खा।
- नदी से पार निकलते हैं।**
- तिलंगा : इन दोनो ने मिलकर जीती नदिया की ये पार रे
लेकिन दोनों नदीं विजेता , एक ही होगा यार रे
इनने मिलकर नदिया जीती इसने इसको यार रे
- कुली टेंट खड़ा करा रहा है। झबूलाल बैठा है**
- तिलंगा 1 : क्या बात है झबूलाल जी , बड़ी परेशान लग रहे है ! ये कुलिया को क्या हुआ है !
हाथ में लाट लीये हुए है।
- सौदागर : जरा मदद कर दे बेटा , मदद कर दे। मैं तो कह रहा था आज टेंट लगाने की जरूरत नहीं है , लेकिन यह मानता ही नहीं है। हाथ टूट गया है विचारे का।
- तिलंगा 3 : टूट गया है कि आपने टोड़ दिया है।
- सौदागर : आते ही आग लगाना शुरू कर दिया , यहां तेरी माया नहीं चलने वाली। अपने बाल बच्चे का भी कोई हाथ टोड़ता है भला , बताओं तो अरे यह तो एकसीडेंट है किसी के साथ भी हो सकता है।
- तिलंगा 1 : किसी के साथ क्या आपके साथ चलने में हाथ टूटा है , जिन्दगी भर के लिए अपाहिज हो गया बेचारा। हरजाना दीजिए उसको।
- सौदागर : अरे मैं कोई पैसा पांकेट में लेकर चलता हूं क्या , कह तो दिया की दोघड़ा पहुंचकर कुछ पैसे दूंगा हांलाकि इसके हाथ टूटने का जिम्मेदार मैं नहीं। फिर भी दया-माया भी तो कोई चीज होती है। अरे , मैं तो आज नहीं रहता तो इयका कबूतर उड़ चूका था। आधा पहुंचकर लगा उब-डूब करने। मैं कहूं डूब ही गया क्या ! सामान बगैरह भी सब इसी के पास था। वो तो समझो मेनें ही आज जान बचाई है इसकी। अब नदी नीले में चलते समय आंख कान बंद कर तो नहीं रखना चाहिए ना। एक बहुत बड़ा पैड़ आ रहा था बहकर टकरा गया और क्या। **कुली से ठीक है** , कोई बात नहीं है बेटा , कुछ पैसे में दूंगा , तुमको। समझे की नहीं। ,

कुली : जी मालिक ।

सौदागर : उंह एक भी बेकार बात नहीं करता है। और ताकता कैसे है ! अपनी हर नजर से जता देता है कि उसकी बदकिस्मती का जिम्मेदार मैं ही हूँ।

तिलंगा 3 : आप तो जिम्मेदार है ही।

सौदागर : मैं क्या जिम्मेदार हूँ जी अर्ये। दुनिया में जितना कूड़ा कचड़ा पड़ा रहेगा है उन सबका जिम्मेदार मैं। नाड़ी का कीड़ा हरामी।

तिलंगा 1 : इसी हरामी के बल पर आपकी दुनिया चलती है सेठ जी। सारी मौजमस्ती इसी के दम पर है।

सौदागर : अरे छोड़ो। लेकिन जो भी कहो आदमी बड़ा चिम्मड़ा है। इतना बड़ा हादसा हुआ लेकिन इस पर तो कोई असर ही नहीं। हमारे में बाल बच्चों को एक कांटा गड़ जाए तो तीन दिन तक बिस्तर से नहीं उठते। और एक ये है। हाथ टूट गया है लेकिन एक भी नहीं निकाली। अभी तक खट रहा है। चिम्मड़ा आदमी

तिलंगा 3: चिमाड़ नहीं घामड़ आदमी है। अभी तक नही समझता है कि कर्म किए जा, फल की चिंता मत कर तू इंसान।

सौदागर : **(हंसता है)** है है। यह तो सिरजनहार की लीला है बेटे। बनाने वाला पॉचों अंगुलियों एक रंग की नहीं बनाता। किसी को बड़ा बनाता है, किसी को छोटा। किसी को कमजोर बनाता है, किसी को बलवान। हम सब तो उसके हाथ की कठपुतलियाँ हैं। कोई जीतने के लिए आया है, कोई हारने के लिए। कोई मरने के लिए है तो कोई मारने के लिए। कहना नहीं, किसी से ये सब आपस की बात है

गीत
 कमजोर मर जाते है ; बलवान तो ऐ यार लड़ा करते हैं
 ऐसा ही हो तो अच्छा है, ऐसा ही होना भी चाहिए
 सब सुविधाएँ बलवान को, निर्बल को मिलें न एक कोड़ी
 जो गिरता उसको गिरने दो उपर से जूते भी मारो
 ऐसा ही हो तो अच्छा है
 जो जंग जीतकर आता है, मुर्गे की टांग चबाता है
 कितने मुर्गों की जान गयी, बावर्ची कहीं गिन पाता है
 ऐसा ही हो तो अच्छा है
 ईश्वर की कैसी लीला है कोई मालिक होता, कोई नोकर
 किस्मत से कोई अच्छा है, कोई होता सबसे बदतर
 ऐसा ही
 हैं हैं हैं ये सब आपस की बात है, आपस की। आपस में ही रहे तो अच्छा है।
 अर्ये, कोई सुन रहा था क्या। **(तिलंगा पीछे इशारा करता है कुली पीछे खड़ा है)**

सौदागर : क्या बात है बचवा ? यहाँ क्यों खड़े हो ?

कुली : टेंट तैयार है मालिक ।

सौदागर : ठीक है, ठीक है। रात में इधर — उधर घूमना नहीं चाहिए। जाओ, मगर लेट जाओ। मेरे लिए परेशान होने की जरूरत नहीं है। **(कुली जाने लगता है)** रुको, तुम टेंट में चले जाओ। आराम से सो जाओ। मैं अभी बैटूंगा थोड़ी देर।

तिलंगा : आज सूरज पश्चिम में उगा है क्या ? मालिक बाहर और नौकर टेंट के भीतर।

- सौदागर : हैं हैं, तुम बात नहीं न समझते हो, भाई। आदमी वही है, जो मौके मौके की नजाकत को समझे। अब तो बेचारा, बीमार आदमी है, थोड़ा आराम कर लेगा। अपना क्या है। अपने राग तो पड़े रहेंगे कहीं पर भी
- तिलंगा : 3: इतने दयालू आप कब से हो गये झब्बूलाल जी।
- सौदागर : बहुत शुरु से। लगभग बचपन से।
- तिलंगा : अच्छा, अच्छा अब मैं बताऊँ आपकी दया मामा का रहस्य। आप है डरे हुए, इसीलिए सोना नहीं चाहते।
- सौदागर : (स्वतः) ये सब आदमी हैं या कम्प्यूटर। फट से असली बात पकड़ लेता है। (तुम लोगों को हर बात में कोई चाल ही नजर आती है। अरे सो सब बात नहीं है।
- तिलंगा : 1 हाथ पैर तौड़ कर यहां तक तो ले आए। अब रात का वक्त है। पुलिस –तुलिस का भी कोई सहारा नहीं है डर लगता है , कहीं सो गये ओर नींद में ही टेंटुआ दबा दिया तो फूर् से उड़ जाएंगे।
- सौदागर : अरे सो सब बात नहीं है। लेकिन आदमी को चौकस तो रहना ही पड़ता है न। भला तुम्हीं बताओं , ऐसे आदमी पर कैसे विश्वास किया जा सकता है। मेरे कारण इसे चोट लगी। और यह अहापिज हो गया। उसकी नजर े देखे तो बदला लेना स्वाभाविक है , सोया हुआ आदमी और मरा हुआ आदमी एक बराबर है कोई फर्क नहीं । ऐसे में कोई कैसे सो सकता है भला।
- तिलंगा 2 : ठीक है मत सोइये। इसमें क्या है। लेकिन बाहर क्यों बैठों हो।
- तिलंगा 1 : बाहर में तो सांप है बिच्छु है , कुछ भी काट सकता है। और उपर से रेगिस्तान। यहां तो ऐसे –ऐसे सांप होते हैं। कि एक बार काट ले तो प्राण–पखेरू बाहर।
- सौदागर : (स्वता) अजें ! एकदम ठीक बात कहते हैं। टेंट के भीतर चले जाना चाहिए। (चल देता है)
- तिलंगा 1 : अरे कहां चल दिये !
- सौदागर : अरे चलते हैं भैया। टेंट के भीतर ही आराम करेंगे।
- तिलंगा 3 : ओ झब्बूलाल जी , बात तो सुनिए , इस सांप–बिच्छु के डर से उस कुली के पास जाकर सोइयेगा। अरे आदमी से खतरनाक कौन जानवर हो सकता है।
- सौदागर : ये बात भी बिल्कुल ठीक कहता है। आदमी से खतरनाक कौन जानवर हो सकता है। और उस पर भी इस आदमी से। चार पैसे के लिए प्राण दे रहा है। और मेरे पास बहूत पैसा है।
- तिलंगा 1 : पैसे की ललक तो आदमी से कुछ भी करवा सकती है।।
- सौदागर : हां , फिर रास्ते में मेंने उसे पीटा भी हैं।
- तिलंगा 1 : गाइड उसके साथ सिर्फ बैठा हुआ था , तो आपने उसे निकाल दिया।
- सौदागर : फिर शक भी किया है मेने इसपर। रिवाल्वर से चमकाया भी है। न , ऐसे आदमी के साथ एक ही टेंट मे कैसे रह सकते हैं। टेंट के भीतर जाना मूर्खता होगी।

गीत सुनो जी , सुनो जी सुनो जी , सुनो जी
सुनो जी-2 सफर की कथा है
कथा में सफर हैं , सफर में कथा हैं
सुनो जी -4

सौदागर : अरे ओ ढक्कन रुक क्यों गया ! चलता रह ।

कुली : इ तो फिर से उहे नदिया सामने है मलिकार ।

समा जी 3 : तो फिर से घुसे नदिया में ! अबकि टांग तुड़वा कर निकलना ।

सौदागर : ए ! चुप रहो जी ! ये तो डेंजरस बात है ।। नदी तो रास्ते में सिर्फ एक ही बार पड़ती है

कुली : हां मलिकार , हमलोग रास्ता भटक गये ।

सौदागर : फिर !

कुली : मालिक , मरियेगा तो चोखा बचा के मारियेगा । बहुत दुखता है ।

सौदागर : अरे , उस सरायवारे ने तुझे रास्ता समझाया थ न !

कुली : हां मरिकार ।

सौदागर : मेंने पूछा कि समझ लिया तो तूने हां कहा था ।

कुली : हां मालिकार ।

सौदागर : लेकिन तु रास्ता समझा नही था ।

कुली : नहीं , मलिकार ।

सौदागर : फिर तुने हां क्यो कहां !

कुली : हम डर गये थे मालिक कि आप हमको भी निकाल देंगे । हमको इतना मालूम है कि रास्ता कुएँ के पास-पास है ।

सौदागर : तो कुएँ के पास-पास चलों ।

कुली : लेकिन मालिक कुएँ किधर है !

(समाजी अपने पैरों से बालू में गडढा बनाते है ।)

समाजी 1 : ये रहा पहला कुआ ।

समाजी 2 : और ये रहा दूसरा ।

समाजी 3 : और ये रहा तीसरा ।

सौदागर : अरे ओ बंदर सब ! भटके हुए आदमी का मजाक उड़ाता है । कोढ़ फूटेगा तुम सबको कोढ़ । ऐ चलो जी इधर ।

कुली : मलिकार दुसर टोली का इंतजार करलेते तो ठीक रहा ।

सौदागर : (एक लात लगाता है) दूसरकी टोली का इंतजार कर लेते। और मेरा आधा मुनाफा मारा जाएगा सो क्या तुम दोगे। चल ससुरा।

गीत सुनो जी

सौदागर : अरे, उधर कहीं जा रहा है रे बाकल। उधर उत्तर है उत्तर। पूरब इधर है। (कुली उतरकर चलने लगता है)

तिलंगा : अरे, क्यों चक्कर में पड़ते है झब्बूलाल जी। दुनियाँ गोल है। जिधर से जाइयेगा एक ही जगह पहुँचयेगा।

सौदागर : तुम्हारे मगज में भूसा भरा हुआ है क्या जी ? जायेंगी ऊपर तो पूरब कैसे पहुँचेंगे। (फिर स्वतः) लेकिन पूरब इधर कैसे हो सकता है, पूरब तो उधर ही होना चाहिए। ऐ, रे कुली, रुक। (कुली रुकता है) तुम्हारे मूँह से बकार नहीं फूरती है क्या रे ? जानता था कि पूरब उधर है तो बोला क्यों नहीं ? उल्टे गलत रास्ते पर चलने भी लगा।

कुली : नहीं मकिकार, इसको लगा आप सही कहते होंगे।

सौदागर : अच्छा बच्चू, बताऊँ में कौन सही कहता होगा ? (पीटता है) बोल, किधर है पूरब ?

कुली : चोटवा बचा के मालिक।

सौदागर : पूरब किधर है ?

कुली : उधर।

सौदागर : उधर, तो तुम उधर क्यों गये ?

कुली : नहीं मालिक।

सौदागर : नहीं। तुम उधर नहीं गये अभी ?

कुली : हाँ मालिक

सौदागर : पानी के कुएँ किधर है, (कुली चुप रहता है) तुमने अभी कहा था कि तुम जानते हो कि पानी के कुएँ कहीं है, कहा था या नहीं, बोलो।

तिलंगा : ऐ झब्बूलाल जी, आप खुद तो पगलाइये गा ही, इसको भी पागल कर दीजिएगा।

सौदागर : ऐ ऐसा खींच के लगायेंगे कि सीधे सुंदरवन में जाकर गिरोगे। (कुली से) अरे साला, बोल, पानी के कुएँ कहीं है। (पीटता है) जानता है कि नहीं ?

कुली : हाँ मालिक।

सौदागर : (पीटता है) जानता है या नहीं।

कुली : नहीं मालिक।

सौदागर : मुझे अपनी पानी की बोतल दो , (कुली से लेता है) अब ये सारा पानी मेरा हुआ। सही रास्ता बता दे तो पानी बॉटकर पीयुंगा नहीं तो अकेले पीजाऊंगा। बोल बोलेगा की नहीं।

तिलंगा : अरे कुछ भी बोल दे न रे। काहे जान दे रहा है ?

कुली : रास्ता उधर से है मालिक।

सौदागर : हॉ। तो अब रास्ते पर आया है। लो इसमें से एक घूंट पानी पीयो और सफर जारी रखो। (स्वतः) मैं तो भूल ही गया था, ऐसी हालत में उसे पीटना नहीं चाहिए था।

गीत — सुनो जी

सौदागर : यह देखो पैरों के निशान, हमलोग यहाँ पहले भी आ चुके हैं।

तिलंगा 3: मैं कहता था न झब्बूलालजी कि दुनिया गोल है।

तिलंगा : (डॉटता है) ये दुनिया गोल है, उपर से खोल है।

सौदागर : ए, चुप। ऐ चलो टेंट गाड़ो, टेंट गाड़ो। (मंच की दूसरी तरफ जाता है) पानी पीता है)

मेरी बोतल खाली हो चुकी है। उसमें कुछ नहीं बचा।

तिलंगा 2 : अच्छा झब्बूलाल जी, अकेले — अकेले,

(सौदागर मुँह दूसरी तरफ करता है)

सौदागर : उसको किसी तरह पता नहीं चलना चाहिए कि मेरे पास पानी बचा है। जरा सी भनक मिलते ही वह मेरा खून तक कर सकता है। अगर वह मेरे पास आया तो मैं उसे गोली मार दूंगा (रिवाल्वर निकालता है) (जोर से) ओह, किसी तरह हम कुएँ के पास पहुँच पाते। मेरा गला सूख रहा है। आखिर प्यासे कब तक रहा जा सकता है।

कुली : गाइड बाबू जो बोतलबा दिये थे उसे मलिकार को दे देना चाहिए। नहीं तो कहीं प्यासल मर गये तो पाप तो चढ़बे करेगा , फॉसी चढ़ने की भी नौबत आ सकती है।

(बोतल लेकर सौदागर की ओर बढ़ता है घबराया हुआ सौदागर बोतल को पत्थर समझता है)

सौदागर कमीने मैं जानता था तू ऐसा ही करेगा।

तिलंगा : केस। मुकदमा। अदालत। 3

(पार्श्व ध्वनी : आर्डर आर्डर

गीत क्या खूब खुदा ने ये अदालत है बनाई
यहाँ मिलती है डाकू को, लुटेरों को रिहाई
होता है जब भी खून किसी बेकसूर का
इंसाफ करने वाले सब होते यहाँ जमा
छाती पे उसकी रखके पॉव हँसते सब जनाब
तब जाके खोलते हैं वे कानून की किताब
कमजोर था, लाचार था, मरना ही था उसे
मजबूर था, बेकार था, मरना ही था उसे
कानून की किताब से झरती है बछियाँ
आगे किसी गवाह की दरकार क्या मियाँ
गिद्धों की टोलियाँ जो उड़ी उस मशान से
जम के है गयी बैठ अदालत में मैं शान से

मुजरिम है घूटता यहाँ बेदाग बेकसूर
उनका तो यही काबा कलीसा यही हुजूर
क्या खूब खुदा

दृश्य 9

(अदालत। कुली की विधवा को समा समझा रहे हैं, दूसरी तरफ झबूलाल खड़े हैं)

तिलंगा : 1 जो चला गया सो चला ही गया। अब तो जो बचा है उसके बारे में सोचो।

2 : रोने-धोने से क्या होगा ? अब जानेवाला लौटकर तो नहीं आयेगा।

3 : अब तो यही विचार करना चाहिए कि कैसे पापी को सज़ा दिलायी जाए।

(इ. सौदागर, गाइड आते हैं। इसरा सौदागर झबूलाल के पास और गाइड विधवा कि पास चला जाता है)

इ. सौदागर : बधाई हो झबूलाल जी, आखिरकार टेंडर आपके इस नामुराद चले को ही मिला।

सौदागर : (बनावटी नरमी के साथ) अच्छा बेटा एक बार निकल जाने दे, फिर बताता हूँ। ऐसी लंगी फसाऊँगा कि जिन्दगी भर याद रखेगा। (प्रकटतः) अरे मेरे यार। मैं तो फंस गया। बर्बाद हो गया (फूट – फूट कर रोने लगता है)

इ. सौदागर : शान्त हो जाइये झबूलालजी शान्त हो जाइये। भगवान के घर देर है अंधेर नहीं है।

तिलंगा 3: अंधेर कैसे नहीं है ? टेंडर तो अब झबूलाल जी को नहीं ही मिलेगा।

(झबूलाल और जोर से रोने लगता है)

इ. सौदागर : ऐ लोंडे। चल फूट यहाँ से। चुप हो जाइये झबूलाल जी। चुप हो जाइये।

जज: (प्रवेश कर) आर्डर – आर्डर

सहायक : आर्डर – आर्डर

जज: अरे उसको मछली बाजार समझ लिया है क्या चारो ? (सब चुप हो जाते हैं) शान्त हो जाइये।

सहायक : लोग शान्त हैं सर।

जज: आ। शान्त है ? ठीक है ठीक है। कुली की विधवा को अदालत में पेश किया जाए।

विधवा : सरकार। इन्हीं सेठ जी का सामान ठो रहे थे और रास्ते में ही (रोने लगती है)

जज: च च च ! शान्त हो जाओ, शान्त हो जाओ। हमको सब मालूम है, क्या हुआ है, यहाँ सब कागज में लिखा हुआ हुआ है। तुम हरजाना भी लेना चाहती हो ?

विधवा : घर में कोई मरद मानुस नहीं है सरकार। दू गो छोटे-छोटे बच्चे हैं। उनको खिलाने वाला कोई नहीं रहा सरकार।

जज: ठीक है। ठीक है। कोई बात नहीं। चलिए अब शुरू किया जाए।

विधवा : सरकार हम बहुत गरीब दुखिया हैं। आपके अलावा अब हमारा कोई नहीं सरकार (पॉव पकड़ लेती है)

जज: ठीक है, ठीक है। जाओ जाकर बैठो वहाँ। चलिए अब शुरू किया जाए।

सहायक : मुजरिम को यहाँ हाजिर करो।

पुलिस : हाजिर है सर !

जज: मुजरिम को नहीं पहले गवाह को हाजिर करो मेरे बाप।

सहायक : गवाह को

पुलिस : हाजिर है सर !

जज: चलिए, इधर सामने आइये। वहाँ, पीछे क्या खड़े हैं ?

इ. सौदागर : हैं है, जी सर। नहीं। माई लार्ड।

जज: ठीक है, ठीक है। आपने क्या देखा है ?

इ. सौदागर : जी हमलोग रेगिस्तान में थे। रात का वक्त था, फिर भी हमलोग चल रहे थे क्योंकि टेंडर का सवाल था। एक बड़ा फायदा तो यह हो गया था कि झब्बूलाल जी का गाइड हमलोगों को मिल गया था। इसलिए हमलोग निश्चित हो गये थे कि टेंडर अब हमको ही मिलेगा।

जज: अरे टेंडर की नहीं वारदात की बात करो मेरे बाप ! वारदात की।

इ. सौदागर : जी सर। है है है। जी तो अचानक हमने गोली की आवाज सुनी ठॉय से आवाज हुई। झूठ नहीं कहूँगा सर, मैं तो बहुत डर गया। लेकिन ये गाइड उस आवाज की ओर दौड़ पड़ा। अब मुझे भी तो दौड़ना ही था। आखिर आप गाइड के बिना रेगिस्तान में क्या कर सकते हैं।

जज: ठीक है ठीक है ! जब आप वहाँ पहुँचे तो आपने क्या देखा।

इ. सौदागर : जी, कुली को गोली लगी थी। वह मरा पड़ा था। पास ही में झब्बूलाल जी खड़े थे। उनके हाथ में पिस्तौल थी और पानी की एक बोतल जिसमें आधा पानी था ?

जज: **(झब्बूलाल से गोली तुमने चलायी थी)**

सौदागर : जी हॉ माई लार्ड ! वह मुझपर वार करना चाहता था।

जज: कैसे वार करना चाहता था ?

सौदागर : वह पीछे से एक पत्थर से बार करना चाहता था।

जज: क्यों वार करना चाहता था ?

सौदागर : जी, पता नहीं।

जज: **(गाइड से)** क्या तुम बता सकते हो वह कुली क्यों वार करना चाहता था ?

गाइड : जी वो वार कर ही नहीं सकता था।

जज: क्यों, ऐसा किस आधार पर कह सकते हो तुम ?

गाइड : उसे हमेशा अपनी नौकरी बचाने की चिंता लगी रहती थी। वह किसी यूनियन का मेंबर नहीं था। इसीलिए सबकुछ बर्दाश्त कर रहा था

जज: बर्दाश्त कर रहा था ? क्या बर्दाश्त कर रहा था।

तिलंगा 1 : यह चक्रव्यूह है गाइड बाबू। इसको भेद सकोगे ?

गाइड : जी .. जी।

जज : सोचते क्या हो जवाब दो।

गाइड : जी, मैं तो बस चांडिल बाजार तक ही उनके साथ था।

सरायवाला : हाँ, मैं कुछ बात हुई। उनके सवालों का इसी तरह जवाब देना चाहिए।

इ. सौदागर : हुजूर, इस मामले में मैं कुछ अर्ज करना चाहता हूँ।

जज : हाँ, कहो ?

इ. सौदागर : जी झब्बूलाल जी के काफिले की रफ्तार शुरू से बहुत तेज रही। इतनी तेज रफ्तार तब तक संभव नहीं जब तक कुली अपने नौकर पर सख्ती न की जाए।

जज: (स्वतः) हाँ ! ये कुछ बात हुई। उसकी बुद्धि तो घास चरने गयी लगती है। देखो ठीक से सोच विचार कर मेरे सवाल का जवाब दो। क्या तुमने कुली के उपर सख्ती की थी ?

इ. सौदागर : जरूर की होगी माई लार्ड।

तिलंगा : क्या बात है झब्बूलाल जी ? ये धंगामल आपसे किस जन्म का बदला ले रहा है ? कहता है, सख्ती की थी।

सौदागर : अरे मेरी किस्मत फूटी है, बेटा, और क्या ? वरना इस धंगू की ये हैसियत कि मुझसे आँखें लड़ाकर बात करता

जज: तुम उधर क्या खुसुर-फुसुर करते हो ? इधर बात करो ना तुमने सख्ती की थी न ?

सौदागर : कभी नहीं माई लार्ड, बिल्कुल नहीं।

जज: तो फिर वह तुमसे नफरत क्यों करता था ?

गाइड : जी वह इनसे नफरत नहीं करता था।

जज: तुम चुप रहो जी। तुम तो सिर्फ चांडिल बाजार साथ थे। आगे क्या हुआ तुम क्या जानो?

तिलंगा 2 : तुम्हें वही कहना है, जो माई लार्ड चाहते हैं।

जज: तुमसे फिर पूछता हूँ। क्या तुमने उसे नफरत करने का मौका दिया था ?

सौदागर : हाँ नहीं माई — लार्ड । बिल्कुल नहीं ।

जज: ओफफो ! कैसे बेवकूफ आदमी से पाला पड़ा है ? भले आदमी, तुम जैसे हो वैसा ही रहो । ज्यादा शरीफ बनने की कोशिश मत करो । इस तरह तुम बच जाओगे क्या ? तुम कहते हो वो तुमसे नफरत नहीं करता था, तो फिर उसने वार कैसे किया ? और तुमने अगर उसे प्यार से रक्खा तो वह तुमसे नफरत क्यों करने लगा ? आदमी को दिमाग से काम लेना चाहिए । हवा में बात नहीं करनी चाहिए ।

इ. सौदागर : झब्बूलाल जी । दिमाग से काम लिजिए ।

सौदागर : हाँय ! अरे मैं तो फँस ही गया था । (प्रकट) जी, जी मैं स्वीकार करता हूँ कि टेंशन में होने के कारण मुझसे कुछ भूलें हुई थीं । एक बार मैंने उसे पीटा था ।

जज: वाह ! वाह ! और इसी एक घटना के चलते वह तुमसे इतनी नफरत करने लगा ?

सौदागर : हाँय ! नहीं ! एक क्या, कई घटनाएँ हुई थीं । जब वह नहीं वार करने में हिचक रहा था । तब मैंने उसकी पीठ से अपनी पिस्तौल सटा दी थी और उसे जबर्दस्ती पार करवाया था । इसी दौरान उसकी बाँह भी टूटी थी । वह भी मेरी ही भूल थी ।

जज: बहुत अच्छे ! तो गाइड के निकलने के बाद तुमने कुली को नफरत करने के अनेक अवसर दिए । (गाइड से) अब तो तुम भी इस बात को मानोगे कि कुली सौदागर से नफरत करता था ।

तिलंगा : मानेंगे कैसे नहीं जब आप मानाने पर पड़ ही गये हैं, तो बिना मनाए छोड़ेंगे थेड़े ही ।

जज: ये लोग कौन है, भाई जब देखो पटर—पटर कर रहे है ।

सहायक : इनको संभालना बहुत जरूरी है, सर । बहुत चतुर हैं साले ।

जज: है न, तो जल्दी से आउट करो इनको । ऐ, यहाँ क्या तमाशा हो रहा है जो भीड़ लगाये हो । चलो, फूटो यहाँ से । चलो (सिपाही से) ऐ सिपाही ! चलो निकालो इनको । ची—चपड़ करे तो बंद कर दो सालों को । हमारे देश में अदालत की मानहानी करने वालों के लिए बड़ी सख्त सजा है बेटे । फँस गये तो प्रेम से जिन्दगी कट जाएगी । चलो । (समाजी — 1 जाता है) हाँ तो अब मामले पर आइये । (दो समाजियों को वहीं पर देख कर) ऐं तुमलोग गये नहीं अभी !

तिलंगा 2 : जी, वो चला गया, सर ।

जज: वो, वो कौन ?

तिलंगा 2: जी वो पहला

जज : और तुम ?

तिलंगा 2 : जी मैं दूसरा ।

तिलंगा 3 : हुजूर बंदे को तीसरा कहते है ।

जज : आउट ! आउट ! भागो यहाँ से सब !

तिलंगा 2,3 : सब सर !

जज : हॉ, हॉ सब

(सभाजी गण सबको बाहर धकेलना शुरू करते हैं। कोलाहल मच जाता है)

तिलंगा : चलिए, चलिए ! सब बाहर निकलिए।

(जब सहायक जज को निकालना चाहता था)

जज : (चिल्लाता है) आर्डर, आर्डर ! जी जहाँ है, वहीं रुक जाए। किसी को बाहर जाने की जरूरत नहीं है। (धीरे – धीरे सब व्यवस्थित होता है) हॉ, तो मैं क्या कह रहा था ?

सहायक : जी, नफरत के विषय में।

जज : नफरत ? हॉ नफरत। अच्छा किससे नफरत ? (सभी चुप हैं) मैं पूछता हूँ किससे नफरत की बात चल रही थी।

तिलंगा 3 : जी कुली से।

जज : हॉ ठीक ! कुली से।

सहायक : नहीं सर, सौदागर से। आपने कहा, अब तो तुम भी इस बात को मानोगे कि वो आदमी सौदागर से नफरत करता था।

जज : हॉ, ठीक, नफरत। जरा सा दिमाग लगाने पर नफरत की बात साफ हो जाती है। (गाइड से) जरा सोचो, जिसे कम पैसा मिलता हो, जिससे सख्ती के साथ पेश आया जाए, जो किसी दूसरे के फायदे के लिए अपनी जान खतरे में डाल रहा हो। उसके मन में नफरत का पैदा होना बहुत स्वाभाविक है। अब मैं सरायवाले से पूछता हूँ। शायद उससे भी कुछ मतलब की बात चले। (सरायवाले से) सौदागर का अपने आदमियों के साथ कैसा बर्ताव था ?

सरायवाला : जी जी जी

समाजी 3: हुजूर, सबके सामने अपनी बात कहने में हिचक रहा है। कहें तो अदालत खाली करवा दें।

जज : हॉ, हॉ। (समाजी गण सबको बाहर धकेलने लगते हैं) नहीं एकदम नहीं

सरायवाला : जी नहीं सरकार, इस मामले के लिए कोई जरूरत नहीं है।

जज : अच्छा, बोलो !

सरायवाला : इन्होंने गाइड को पीने के लिए सिगरेट दी। जब निकाला तो उसके पूरे पैसे दे दिये थे। कुली के साथ भी इनका बर्ताव अच्छा था।

जज : अच्छा था ? ये कैसे हो सकता है ? (कुछ सोचता है) तुम्हारा पड़ाव उस रास्ते का अंतिम पुलिस थाना था ?

सरायवाला : जी हॉ, सरकार उसके बाद रेगिस्तान शुरू होता है।

जज : अच्छा, अब समझा ! सौदागर का दोस्ताना बर्ताव उस समय की मजबूरी थी। फिर ये स्थायी भी नहीं था। यह महज दिखावा था। इस घटना से मुझे युद्ध के दिनों की याद

आ गई। जैसे — जैसे हम दुश्मन की सीमा के करीब होते जाते थे, जवानों से हमारी हमदर्दी, हमारा प्यार बढ़ता ही जाता था। ऐसी दोस्ती का कोई मतलब नहीं।

सौदागर : हमलोग दोस्त की तरह थे। इसका सबूत यह है कि वह मेरे साथ गाता हुआ चल रहा था। लेकिन जब से उसकी पीठ पर पिस्तौल लगाई थी, उसे दुबारा गाते हुए नहीं सुना।

जज : उसके मन में नफरत पैदा हो गयी होगी। मुझे फिर युद्ध के दिनों की बात याद आ रही है। उस समय जवान का अपने अफसरों से यह कहना ठीक भी लगता है कि साहब आप अपने लिए लड़ते हैं। और मैं आपके लिए। उसी तरह कुली भी यहाँ कह सकता था। हे सौदागर, तुम अपना धंधा करते हो और मैं तुम्हारा।

सौदागर : माई लार्ड, मुझे कुछ और भी स्वीकार करना है। जब हमलोग रास्ता भटक गए थे तो पहले पानी की बोतल तो हमने बॉट कर पीया लेकिन दूसरी में अकेले पीना चाहता था।

जज : अच्छा ! क्या तुमने उसने पानी पीते हुए देखा था।

सौदागर : मुझे लगता है उसने देख लिया था। वह मेरी तरफ पत्थर उठा कर बढ़ा। लेकिन हुजूर मैं तो पहले से जानता था कि वह मुझसे नफरत करता था इसीलिए मैं पहले से ही चौकस था। मेरा अनुमान था कि वह मौका पाते ही मुझे मार देगा। अगर मैंने उसे नहीं मारा होता तो मेरी मौत निश्चित थी।

विधवा : माई — बाप। वो किसी को मारिये नहीं सकते थे। उ कभी एगो चीटी भी नहीं मारे थे।

गाइड : घबराओ नहींए, उसकी बेगुनाही का सबूत मेरी जेब में है।

तिलंगा : हुजूर, माई — बाप ये पत्थर पड़ा हुआ था घटना स्थल पर। मुझे लगा कहीं इसकी भी जरूरत न हो। इसीलिए भागे-भागे लेकर आये।

जज : ठीक है, ठीक है। इनके हाथ में दे दीजिए। (समाजी लेता है पत्थर छोटे ढेला जैसा है)

तिलंगा 1 : माई-बाप। तो मैं जाऊँ सर ?

जज : अयँ, हॉ हॉ। न न। किसी की बाहर नहीं जाना है।

(समाजी। अपने दल में शामिल हो जाता है।)

जज : (पत्थर हाथ में लेकर) क्या वह वही पत्थर है ? तुम पहचानते हो ?

सौदागर : (हाथ में लेकर) सनहीं माई लार्ड ! यह तो बहुत छोटा है। वह एक बड़ा पत्थर था।

इ. सौदागर : वह गाइड के पास है माई — बाप। उसी ने मुर्दे के हाथ से निकाला था। (गाइड बोतल को दिखाता है)

सौदागर : यही पत्थर है माई लार्ड। इसी से कुली ने मुझ पर हमला किया था।

तिलंगा : बाप रे ! काफी बड़ा पत्थर है।

गाइड : अब देखिये सर। इस पत्थर में क्या है। (बोतल खोलता है, उससे पानी गिरता है)

जज : (छींटा पड़ने पर) हँ हँ हँ उधर गिराओ। छींटा पड़ता है।

सहायक : अरे, यह तो पानी की बोतल है।

तिलंगा : जी हॉ पानी की बोतल है।

जज : अयँ, पानी की बोतल है। हॉ, अब तो मानना ही पड़ेगा कि वह कुली तुम्हे बोतल दे रहा था, जिसमें कुछ भरा था।

सहायक : अब तो गलत है कि उसका जान लेने का इरादा बिल्कुल नहीं था।

गाइड : देख लिया , मेने सिद्ध कर दिया कि कुली बेगुनाह था। वह अपने मालिक को पानी देने गया था। जब वह सराय से निकल रहा था, जब वो सराय से निकल रहा था, तो मैंने उसे पानी की बोतल दी थी। सरायवाला भी पहचानते है। कि यह मेरी बोतल है।

जज : लेकिन ये कैसे मान लेते कि वह पानी की बोतल थी ?

सौदागर : हॉ, मैं कैसे मान लेता कि वो पानी की बोतल थी। वो मुझे पानी पिलाता इसका कोई कारण नहीं था, वो मेरा दोस्त नहीं था।

गाइड : लेकिन, वो आपको पानी देने गया था।

जज : क्यों। सवाल तो यह है कि वह क्यों देने गया था ?

गाइड : मेरे विचार से उसने सोचा होगा कि सौदागर प्यासा है। (जज और सहायक मुस्कुराता है) आप शायद उसे बुद्धू ही मानेंगे। जहाँ तक मैं समझता हूँ, सौदागर के खिलाफ उसके मन में कुछ भी नहीं था।

सौदागर : तब तो वह महाबुद्धू रहा होगा। मेरे कारण वह अपाहिज हुआ। ज्यादा सही तो यह था कि वह मुझसे बदला लेने की सोचता।

गाइड : (स्वतः) अच्छा तो ये सब समझ में आता है आपको।

सौदागर : जब वह थका हुआ था तब उसकी पिटाई हुई।

गाइड : माई — बाप। पहला मौका मिलते ही वह मुझ पर वार नहीं करेगा। यह मैं कैसे मान लेता? आप ही बताइये, किसी अच्छे भले आदमी को देखकर आप उसे पगला कैसे मान लेंगे।

जज : मै, तुम्हारी बात समझ गया। तुम्हें अच्छी तरह मालूम था कि कुली को तुमसे शिकायत है। यह एक बड़ी जटिल स्थिति है। मैं इसकी नजाकत को समझ पा रहा हूँ। कोई आदमी है, तुम्हें नहीं पता कि वह खतरनाक है या नहीं। लेकिन तुम्हारे जान के खतरे में होने की संभावना है तब तो तुम ऐसे आदमी की हत्या कर सकते हो जो खतरनाक नहीं था।

तिलंगा : जी हॉ माई — बाप जो खतरनाक नहीं था उसकी हत्या तो आप कर ही सकते हैं।

जज : पुलिसवालों के साथ भी ऐसा होता है। वे शांत खड़ी भीड़ पर भी गोली चला देते हैं, क्योंकि उन्हें डर रहता है कि ये कभी भी हम पर वार कर सकते हैं। इन परिस्थितियों में उनका गोली चलाना महज उनके डर का इजहार है, नियम तो यही कहता है कि आदमी अपने दुश्मन से डरेगा।

सौदागर : माई — बाप फिर आप मुझे नियम से बाहर कैसे मान सकते हैं।

जज : सही बात है, सही बात है। नियम तो नियम है। सब पर लागू होता है। यहाँ नियम का मतलब है बदला। अब कोई बदला नहीं लेता है तो इससे नियम तो बदल नहीं सकता है।

सौदागर : और जो सच्चा आदमी है वह नियम से बाहर क्यों जाएगा माई बाप ?

जज : सही बात है, सही बात है।

गीत

जज : यही नियम है।

सहायक : क्या नियम है।

जज : यही नियम है – 4 जैसी करनी बैसी भरनी – 2
 आँख के बदले आँख निकालो, टांग के बदले टांग
 सिर के बदले सिर उतार लो यही नियम की मांग
 यही नियम है – 4
 जो नियम से बाहर जाकर खोजे अलग निदान
 मूर्ख होगा लल्लू होगा, गादहे की संतान

तिलंगा : मी लार्ड, गदहे की संतान – 2

जज : आर्डर, आर्डर

गाइड : क्या नियम है – 4 – 2

1. उस नियम के भीतर भैया मानवता अपराध
 दया – धर्म का काम जो करता करता है अपराध किया नियम

2. आँखें अपनी बंद करो जब कोई प्यास से मरता
 कान में अपने रुई ठूस लो, जब आँहें भरता – क्या नियम

जज : यही नियम है 4

अदालत अब इस पर विचार करेगी। (जज और सहायक परिक्रमा करते हैं)

इ. सौदागर : (गाइड से) क्या तुम्हें इस बात का जरा भी डर नहीं कि अब तुम्हें कभी काम नहीं मिलेगा?

गाइड : सच तो मुझे कहना ही था।

इ. सौदागर : अच्छा ! तो तू हरिश्चन्द्र की खानदान का है। तब तो कोई बात नहीं।

जज : फैसला सुनाने से पहले अदालत तुमसे एक सवाल करेगी। क्या कुली के मरने से तुम्हें कोई फायदा भी हो सकता था ?

सौदागर : माई – बाप ! बल्कि देघड़ा में तो मुझे उसकी बहुत सख्त जरूरत थी। वह नक्शा और दूसरे सामान ढो रहा था जिनके बिना हम कुछ नहीं कर सकते थे। और इस हालत में मैं था ही नहीं कि अपना सामान खुद ढो सकूँ।

- जज : तब तो तुम्हारा काम नहीं हो सका होगा।
- सौदागर : एकदम ! मैं तो बरबाद हो गया साहब।
- जज : अब मैं फैसला सुनाता हूँ। यह बात तो साबित हो चुकी है कि कुली सौदागर के पास पत्थर लेकर नहीं पानी की बोतल लेकर गया था। लेकिन यह साबित हो जाने पर भी पूरे मामले में कोई अन्तर नहीं आता।
- तिलंगा : पूरे मामले में कोई अन्तर नहीं आता।
- जज : यकीन करने लायक बात यही है कि कुली अपने मालिक को कुछ पाने के लिए देने के बजाय मारने गया था। कुली असहाय वर्ग से आता है। ऐसे आदमियों से हम इस बात की उम्मीद कर ही नहीं सकते कि वह अपने हिस्से के लिए विरोध नहीं करेगा ! पानी के बँटवारे में बेइमानी को वह बर्दाश्त नहीं कर सकता था। ऐसे लोगों के सोचने की सीमा तंग होती है।
- तिलंगा : ऐसे लोगों के सोचने की सीमा तंग होती है।
- जज : वे सिर्फ उपरी सच्चाई को देखते हैं। इनकी नजर में जुल्म का बदला लेना ही सही है। और फिर, सौदागर, उस वर्ग का नहीं, जिस वर्ग का कुली था। सौदागर उससे दोस्ताना बर्ताव की उम्मीद कर ही नहीं सकता था जिस पर उसने जुल्म ढाये हों। सौदागर को लगा कि वह खतरे में है। सुनसान जगह होने के कारण भी शक पैदा हो गया था। उसने समझा कि पुलिस और कानून का डर नहीं होने के कारण कुली के मन में बदले का ख्याल आया है। इसलिए अपराधी ने जो कुछ किया, अपने बचाव के लिए किया।
- तिलंगा : अपराधी ने जो कुछ किया अपने बचाव के लिए किया।
- जज : इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि वास्तव में उस पर कोई खतरा था या उसने सिर्फ ऐसा महसूस किया था। महत्वपूर्ण बात तो यही है कि उसे लगा कि वह खतरे में है। परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए अदालत सौदागर झबूलाल को बाइज्जत बरी करती है। और कुली की विधवा द्वारा की गई हरजाने की अपील को नामंजूर करती है।
- तिलंगा : अपील को नामंजूर करती है।
- गीत (कुछ क्षण के बाद)
 सुनो जी सुनो जी सुनो जी सुनो जी – 2
 सुनो जी सुनो जी सफर की कथा है
 सुनो जी सुनो जी, सुनो जी, सुनो जी
 (सभी पंक्ति में बाहर निकल जाते हैं)

(समाप्त)